अध्ययन सामग्री

विषय - हिन्दी

वर्ग - स्नातकोत्तर

सेमेस्टर - III

प्रश्नपत्र - XI

सुमन कुमारी

एच.डी. जैन कॉलेज, आरा

हिन्दी विभाग

रिपोर्ताज स्वरूप व विशेषता, विकास

रिपोर्ताज का स्वरूप स्पष्ट करते हुए उसका विकास का वर्णन करें।

रिपोर्ताज हिन्दी की सर्वथा नवीन विधा है। दूसरे महायुद्ध में इसका विकास यूरोप में हुआ। फ्रांसीसी शब्द रिपार्तज अंग्रेजी के रिपोर्ट के निकट है। हिन्दी में इसे वृत्त निदेशन या सूचनिका कहते हैं। समाचार-पत्रों के लिए लिखे गये रिपोर्टों में तथ्यों का विवरण रहता है। रिपोर्ताज में तथ्यों में कलात्मकता और साहित्यिकता का आवरण प्रदान किया जाता है। रिपोर्ताज में संवेदना और भावना का आवेश रहता है। युद्ध-क्षेत्र से प्रेषित वृत्तांत अमेरिका और यूरोप में इस कला की प्रतिष्ठा के कारण बने। रिपोर्ताज की परिभाषा -

"संघर्ष के क्षणों को तत्काल शब्दों में प्रस्तुत करना रिपोर्ताज है। युग चेतना, युग संघर्ष और जीवन की साधारणता को कला में स्थापित करने की प्रवृत्ति से ही इसे साहित्यिकता प्राप्त होती है। वास्तविक घटना से भिन्न कल्पना पर आधारित किसी घटना का आवेशपूर्ण वर्णन इस विधा में परिगणित नहीं हो सकता। घटनाओं की तत्कालीन मार्मिक प्रतिक्रिया ही आकर्षक शैली का परिधान ग्रहण कर रिपोर्ताज बनती है।"

Scanned with CamScanner

रिपोर्ताज की विशेषताएं :- इसके निम्न विशेषताएं इस प्रकार हैं-

रिपोर्ताज में घटनाओं का सहज मनोवैज्ञानिक विश्लेषण होता है। लेखक अपनी अनुभूतियों को अत्यंत निखरे रूप में प्रस्तुत कर दूसरों को प्रभावित करने की क्षमता रखता है।

इसमें कल्पना का तत्व कम और यथार्थ अधिक रहता है।

) रिपोर्ताज में वर्णित घटना बड़ी तीव्रता से आँखों के सामने कौंध जाती है।

) रिपोर्ताज के लेखक को वस्तुस्थिति और विषय की पूरी जानकारी होना चाहिए।

हिन्दी में रिपोर्ताज का विकास :-

" आधुनिक जीवन की द्रुतगामी वास्तविकता में हस्तक्षेप करने के लिए मनुष्य को नई साहित्यिक रूप विधा को जन्म देना पड़ा। रिपोर्ताज उनमें से प्रभावशाली और महत्वपूर्ण विधा है।"

'हंस' के 'समाचार और विचार' स्तम्भ के अन्तर्गत इस विधा को लोकप्रियता प्राप्त हुई। श्री शिवदान सिंह चौहान ने 'मौत के खिलाफ जिन्दगी की लड़ाई' रिपोर्ताज में राष्ट्र का स्वतंत्रता से पूर्व का जीवन्त परिवेश चित्र प्रस्तुत किया। रांगेय राघव ने 'अधमरे जीवन' शीर्षक से 'विशाल भारत' के लिए रिपोर्ताज लिखा।

श्री प्रकाशचन्द्र गुप्ता ने घटना-प्रधान रिपोर्ताज लिखे। 'हंस' में प्रकाशित स्वराज्य भवन' आ इनका उल्लेखनीय रिपोर्ताज है। कुछ प्रमुख रिपोर्ताज निम्नलिखित हैं-

Scanned with CamScanner

र्पहिन कठोर जीवन संघर्ष की पृष्ठभूमि
पर श्री भगवतशरण उपाध्याय ने राहुल जी के
परिचयात्मक रिपोर्ताज लिखे हैं।

2) प्राचीन लोक - गाथाओं और जनजातियों के आधार पर अमृतलाल नागर ने 'गदर के फूल' की रचना की।

3) श्री फणीश्वर नाथ रेणु के 'एकलव्य के नोट्स' सर्वथा नवीन शैली की रचना है।

4) चीन और पाकिस्तान के साथ हुए युद्धों पर श्री शिवसागर मिश्र ने रिपोर्ताज लिखे।

5) राष्ट्रीय महत्त्व की हलचल को शब्द देने का कार्य इस विधा के द्वारा अत्यंत सफलता के साथ हुआ है।